नाग वंश: बाबासाहाब डॉ अम्बेडकर का ऐतिहासिक दृष्टीकोन

डॉ सुर्यकांत कापशीकर
इतिहास विभाग प्रमुख
यशोदा गर्ल्स आर्ट्स अंड कॉमर्स कॉलेज
स्नेह नगर, नागपूर

प्रस्तावना :-

'नाग' यह भारत के एक प्राचीन वंश का नाम है|[i] 'बाबासाहब डॉ अम्बेडकर अपने नागपूर बौद्ध धम्मदीक्षा समारोह में दिनांक १५ ऑक्टोबर १९५६ के भाषण में, "नागपूर शहर यह नाग वंशियो का शहर है और उनके कारण इस स्थान को नागपूर नाम मिला है," ऐसा वक्तव्य करते है| नागपूर एक हजार पुराना ऐतिहासिक स्थल है ऐसा भारत कें एक प्रमुख पुरातत्वविद् डॉ वि. स. वाकणकर अपने उत्खनन कें आधार पर कहते है|[ii] आर्यो कें सिंधू सभ्यता पर आक्रमण सें विस्थापित होकर उत्तर भारत सें नागवंशीय लोगो की टोलीयाँ सर्वप्रथम इ. स. पूर्व २७५० आसपास दक्षिण भारत में आने लगी| महर नामक नाग टोलीयाँ मध्यप्रदेश के बिलासपुर जिले के मल्हार प्रांत सें दक्षिण भारत के पूर्व विदर्भ में आकर स्थायिक हो गयी| इन लोगो ने यहा के जंगल साफ करके अपनी बस्तीयाँ बनाई इसी कारण इस प्रदेश की नदी को नागनदी तथा इस प्रदेश को नागपूर यह नाम मिला| भारशिव नाग का एक शिलालेख नागपूर परिक्षेत्र के पवनी नामक स्थान पर प्राप्त हुआ| इससे यह सिद्ध होता है की, इस प्रदेश में नागवंशीय राजा की सत्ता थी| विख्यात इतिहासकार विद्याधर महाजन कहते है की, "नाग लोक प्राचीन भारत के नागपूजक अनार्य मुलनिवासी थे| वे देश के विभिन्न प्रदेशो में रहते थे|"[iii]

नाग वंश :-

बाबासाहब डॉ अम्बेडकर के अनुसार , भारत के इतिहास का आरंभ नाग वंश से होता है| नाग वंश का अर्थ नागसर्प द्वारा निर्मित वंश ऐसा नही है| प्राचीन काल में जो लोग नाग को अपना दैवत मान कर उसका पूजन करते थे, जिनका टोटम चिन्ह नाग था उन्हे नागवंशीय लोग कहा जाता है| नाग यह प्राचीन भारत का एक महत्त्वपूर्ण वंश है| महाभारत के आदीपर्व नागवंश का स्पष्ट उल्लेख मिलता है|[iv] महाभारत के २२८ वे अध्यायानुसार, कृष्ण तथा अर्जुन ने खांडववन सें नागसत्ता का उच्चाटन कर के उनकी राजधानी हस्तिनागपुर में कुरु की राजधानी प्रस्थापित कर दी| कुरु राज्य क्षीण के उपरांत नागवंशियो ने पुन: अपना वर्चस्व निर्माण किया|

नागवंशीय लोहयुगीन महाश्म संस्कृती के निर्माता थे| सिंधू सभ्यता में अनेक नाग मुद्रा तथा नाग छत्र धारीत योगीयो की मुर्तीया प्राप्त हुई है, जिससे यह सिद्ध होता है की, सिंधू सभ्यता के निर्माता द्रविड भी नागपूजक नागवंशीय थे| विश्वविख्यात भारतीय इतिहास संशोधक डॉ दामोदर धर्मानंद कौसंबी इस बात की पुष्टी करते है| बाबासाहब डॉ अम्बेडकर कहते है की, "दक्षिण भारत कें द्रविड तथा उत्तर भारत कें नाग अथवा असुर ये

दोनो एक ही वंश कें लोग है| द्रविड और नाग यह एक ही वंश के लोगो कें अलग अलग नाम है| नाग यह वांशिक नाम तथा द्रविड यह भाषिक नाम है|”[v] उल्लेखनिय है की, द्रविड लोगो का टोटम नाग था| इस संदर्भ में नागवंशियो का उगमस्थान संशोधित करते हुये वि. रा. शिंदे लिखते है की, “नागवंशियो का मुल हमे सिंधू सभ्यता में दिखाई देता है|”[vi] ऋग्वेद में भी नाग लोगो का ‘दास’ इस शब्द में बार बार उल्लेख आता है| दास यह दाहक इस इंडोआर्यन शब्द संस्कृत रुपांतरण है| नागवंशीय राजाओ को ‘दाहक’ कहा जाता था| नाग लोग यह जंगली या असंस्कृत लोग नही थे| ऋग्वेद में उल्लेखित सप्तसिंधू प्रदेश में वृत्र लोगो की सत्ता थी| उन्हे ‘अहिवृत्र’ ऐसा भी कहा जाता था| अहि का अर्थ नाग होता है| इससे अहिवृत्र नाग वंश के थे यह स्पष्ट होता है|

इ. स. पूर्व ६४२ में बिहार में स्थापित मगध साम्राज्य का संस्थापक शिशुनाग यह नागवंशीय था| मौर्य साम्राज्य का संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य यह मगध के अंतिम राजा के परिवार सें संबंधित था अर्थात नागवंश सें संबंधित था| पुराणो में उल्लेख आता है की, नाग राजाओ ने विदिशा, मथुरा, कांतिपुरी एवं पद्मावती इन स्थानो पर राज्य किया| वृषराजनाग पद्मावती का प्रथम तथा गणपती नाग अंतिम शासक था| विदिशा कें नाग वंश का संस्थापक शेषनाग था| सर्वनाग यह अंतर्वेदी प्रदेश का शासक था| गुप्तसम्राट समुद्रगुप्त इसने दक्षिण भारत के गणपती नाग, नागसेन, अच्चुत नाग, नंदी नाग आदी नाग राजाओ का पराभव किया ऐसा उल्लेख अलाहाबाद प्रशस्ती में आता है| चंद्रगुप्त द्वितीय की पत्नी कुबेरनागा यह नागवंशीय राजकन्या थी| मध्यप्रदेश के सागर जिले में इ. स. ३६५ में लिखित एरणगाव स्तंभालेख में श्रीधरवर्मा का सेनापती सत्यनाग तथा उसके नागवंशीय सैनिको का उल्लेख आया है|[vii] वाकाटक राजा गौतमीपुत्र सातकर्णी इनका विवाह भारशिव के नागवंशीय राजा की कन्या सें हुआ था| भवनाग यह भारशिव का अंतिम शासक था| परमार राजा सिंधराज इनका विवाह शशीप्रभा नामक नागकन्या सें हुआ था| ओरिसा के सनातीकार राजा ने त्रिभुवन महादेवी नामक नागकन्या सें विवाह किया था| इसप्रकार संपूर्ण भारत में नाग वंश के ऐतिहासिक तथ्य उजागर होते है|

दक्षिण भारत में नागवंशियो के अनेक छोटे छोटे राज्य थे| सातवाहन काल में कळलाय नामक नागराजा कर्नाटक, तेलंगणा एवं महाराष्ट्र में शासन करता था| उसने अपनी पुत्री नागनिका का विवाह सातवाहन राजा सिमुक सातकर्णी सें किया था|[viii] अंतिम सातवाहन शासक पुळूमावी के कार्यकाल में स्कंदनाग नामक नागवंशीय शासक बेल्लारी में शासन करता था| ज्ञानकोशकार श्री. व्य. केतकर के मतानुसार, सातवाहन शासक नागवंशीय थे तथा उनका प्रथम राजा शेषनाग नाम सें जाना जाता है| डॉ काशिप्रसाद जयस्वाल के मतानुसार दक्षिण भारत यह नाग वंशियो का प्रदेश था| “आंध्रप्रदेश परिक्षेत्र में प्रथम इसा के प्रारंभ में नाग लोगो का शासन था|” ऐसा विधान डॉ अम्बेडकर करते है| नाग वंश का गौरव करते हुये डॉ अम्बेडकर आगे कहते है की, “अनार्य नागवंशीय लोगो के उत्थान सें ही प्राचीन भारत के इतिहास का प्रारंभ होता है| नाग अत्यंत शक्तिशाली थे| आर्य भी उन्हे पराजित न कर सके अंततः आर्यो को उन्हे अपना जैसा सामाजिक दर्जा देना पडा| प्राचीन काल में भारत को जो गौरव प्राप्त हुआ है उसका संपूर्ण श्रेय अनार्य नाग वंश को है|”

बौद्ध धम्म के प्रसारक नाग:

आर्यपूर्व काल सें ही नागवंशीयो की एक खास सभ्यता थी| जिसका मूलाधार समता था| इसलिये भगवान भगवान बुद्ध, जो स्वयं एक नागवंशीय थे,[ix] गौतम नामक नाग देवता सें प्रेरित हो कर शुद्धोदन ने उनका नाम गौतम रखा था| भगवान बुद्ध ने अपने बौद्ध धम्म में समता तत्त्व का समावेश किया था| इसी समान विचारधारा के कारण बहुतांश नाग लोगो ने बौद्ध धम्म का स्वीकार किया| बुद्ध जन्म के समय नंद तथा उपनंद नामक नाग वंशियो ने लुम्बिनीवन में बुद्ध कें स्नान के लिये थंडे तथा गरम पाणी की व्यवस्था की थी|[x] मुचलिंद नामक नाग ने ध्यानसाधनारत भगवान बुद्ध को संरक्षण देकर उनकी आंधी तथा वर्षा सें रक्षा की थी| बौद्ध साहित्यानुसार भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण के समय अनेक नाग राजा उपस्थित थे|[xi] उत्खनन सें प्राप्त भगवान बुद्ध की नाग छत्रधारी अनेक मुर्तीया, बौद्ध धम्म को नागवंशियो का संरक्षण था यह सिद्ध करती है| नागवंशीय लोगो के योगदान के कारण ही संपूर्ण भारत में बौद्ध धम्म का प्रचार-प्रसार हुआ| अहिछत्र में प्राप्त स्तूप में भगवान बुद्ध ने नागराज को सात दिन धम्मोपदेश किया था ऐसा उल्लेख बौद्ध साहित्य में मिलता है| कार्लाईल इस पुरातत्त्वशास्त्रज्ञ के मतानुसार, राजस्थान के नागरी नामक शहर में बौद्धस्तूप के अवशेष मिलते है| राजस्थान के दुसरे एक शहर नागर में बोधिचक्र तथा चक्रचिन्ह अंकित सिक्के मिले है| काश्मीर में कर्कोटक नागवंशीय राजस्त्रीयो ने बौद्ध विहार का निर्माण किया था ऐसा वर्णन कल्हण करता है| इससे ये सिद्ध होता है की इस नागक्षेत्र में बौद्ध धम्म का प्रभाव रहा होगा| मिलिंद राजा के शासनकाल में नागसेन नामक बौद्ध भिक्षु ने बौद्ध धम्म का प्रचार-प्रसार किया था|[xii] इस संदर्भ में डॉ अम्बेडकर कहते है की, भारत में बौद्ध धम्म का सर्वाधिक प्रचार-प्रसार अगर किसी ने किया है तो वो नागवंशियो ने किया है|

महाराष्ट्र में सर्वप्रथम नागवंशीय लोगो ने बौद्ध धम्म का स्वीकार किया| भगवान बुद्ध कें जीवनकाल में ही उन्होने नागपूर क्षेत्र में बौद्ध धम्म को प्रचलित किया था| स्वयं भगवान बुद्ध भद्रावती, रामटेक इस नागपूर परीक्षेत्र आये थे ऐसा उल्लेख बौद्ध साहित्य में मिलता है| भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण के उपरांत यहा के नाग लोगो ने भगवान बुद्ध का एक दंत यहा लाकर नागपूर परिक्षेत्र के पवनी इस स्थान पर भव्य स्तूप का निर्माण किया| इस बात की पुष्टी जेष्ठ पुरातत्त्वविद शां. बा. देव करते है| इस स्तूप पर मुचलिंद नाग का कथानक आलेखीत है|[xiii] पुरातत्त्वीय अध्ययन सें यह स्तूप मौर्यपूर्व कालीन है, यह सिद्ध हुआ है| इसका अर्थ नागवंशियो ने सम्राट अशोक के पूर्व ही नागपूर क्षेत्र में बौद्ध धम्म का प्रचार-प्रसार किया था, ऐसा प्रतीत होता है| मौर्यकाल में नागपूर फणींद्रपूर नाम से प्रसिद्ध था उल्लेखनीय है की, फणी यह शब्द नाग सें सबंधित है| भगवान गौतम बुद्ध के महापरीनिर्वाण के ६०० वर्ष उपरांत नागपूर परिक्षेत्र के रामटेक-मनसर में नागार्जुन नामक बौद्ध विद्वान पंडित हुआ, जिसने नागपूर परिक्षेत्र में बौद्ध धम्म का जोरदार प्रचार-प्रसार किया|[xiv] मनसर में आज भी नागार्जुन टेकडी में बौद्ध स्तूप के अवशेष मिलते है| नागपूर कें एक समाज सुधारक तथा विचारवंत रेवाराम कवाडे कें मतानुसार, नागार्जुन कें नाम पर सें इस क्षेत्र का नाम नागपूर पडा| नागपूर परिक्षेत्र के ही भद्रावती नामक शहर के भद्रनाथ मंदिर में प्राचीन नागप्रतिमा है जो बौद्ध धम्म सें सबंधित है| यह ये सिद्ध करता है की नागवंशीय लोगो ने संपूर्ण भारत की तरह महाराष्ट्र तथा महाराष्ट्र के नागपूर परिक्षेत्र में बौद्ध धम्म का प्रचार-प्रसार किया था|

गुप्तकाल में ब्राह्मण धर्म को राजाश्रय मिलने के कारण ब्राह्मणो ने बौद्धो के विरुद्ध आंदोलन चलाया| आद्य शंकराचार्य ने परमार, प्रतिहार, चाहमान तथा चालुक्य इन नाग वंशियो को अग्निवंश के क्षत्रियो का स्थान देकर उनके द्वारा बौद्धानुयायीयो का दमन किया| महाराष्ट्र में भी अनेक नागवंशीय बौद्धो को उपनयन संस्कार के माध्यम सें ब्राह्मण धर्म में स्थान दिया गया| वैदिक धर्म के पुनरुत्थान के बाद अनेक नागवंशीय लोगो ब्राह्मण धर्म स्वीकार नही किया| वे अपने बौद्ध धम्म का पालन करते रहे| इसकारण ब्राह्मण धर्म सें उनपर अनेक अन्याय अत्याचार होते रहे| परिणामस्वरूप कुछ नागवंशियो ने नागपूर परिक्षेत्र का त्याग किया लेकीन उनके बौद्ध धम्म के पुरातात्त्विक अवशेष आज भी हमे इस क्षेत्र में दिखाई देते देते है| पुनरुज्जीवित ब्राह्मण धर्म के अत्याचार सें पिडीत जिन नागवंशियो ने जंगल में आश्रय लिया वे आदिवासी कहलाये आज भी गोंड, कोरकू, कोलाम, बैगा, संथाल, मुंडा, बोडो इत्यादी आदिवासी स्वयं को नाग वंशीय मानते है| जो नागवंशीय जंगल न जाकर गावो के बाहर बस गये उन पर सामाजिक बहिष्कार डाल कर दलित अस्पृश्य घोषित कर दिया गया| इ. स. पूर्व १७० सें १५० में रचित मनुस्मृती में अस्पृश्यता के बीज दिखाई देते है| डॉ अम्बेडकर के मतानुसार इ. स. ४०० के आसपास बौद्धधम्म तथा हिंदूधर्म के बिच संघर्ष सें अस्पृश्यता का निर्माण हुआ| ब्राह्मण लोगो द्वारा बौद्ध तथा जित लोगो का द्वेष तथा गोमांस भक्षण इन दो कारणो सें अस्पृश्यता का प्रादुर्भाव हुआ है ऐसा डॉ अम्बेडकर का मत है| इसप्रकार नाग वंशीय लोगो ने अंत तक बौद्ध धम्म का त्याग न करने के कारण वे अस्पृश्य घोषित किये गये|

नागवंशीय महार:

महाराष्ट्र की एक अस्पृश्य मानी जानी वाली महार इस प्रमुख जाती का नाग वंश सें सबंध जोडा जाता है| प्राचीन नाग वंश में महर नामक जमात थी| महार जाती उत्पत्ती इसी महर जमात सें होने की अधिक संभावना है| अर्थात महार जाती नागवंशीय है| इस संदर्भ में महाराष्ट्र के प्रसिद्ध विद्वान राजाराम रामकृष्ण भागवत लिखते है की, “महार म्हणजे प्राचीन नाग असून अति पुरातन काळाचे अस्सल देशी लोक आहेत.”[xv] प्रसिद्ध समाजशास्त्रज्ञ डॉ. दत्तात्रय खानापूरकर के मतानुसार, “वेद-पुराणात ज्या नाग लोकांचे वर्णन आले आहे, ते महार लोक असावे.” “महाराष्ट्र के महार लोगो का उपनाम तथा प्राचीन कालीन नागवंशीय लोगो का कुलनाम यह महारो का नाग वंशियो सें संबंध सिद्ध करते है” ऐसा विचार इतिहासाचार्य विश्वनाथ काशिनाथ राजवाडे अपने ‘कोंकणी व नागलोक’ इस लेख में व्यक्त करते है|[xvi] अलेक्झांडर रॉबर्टसन जो एक प्रख्यात इतिहास संशोधक थे, वे अपने ‘Mahar Folk’ ग्रंथ में “महार समुदाय का प्रथम राजा नागवंशीय था” ऐसा विधान करते है| प्रसिद्ध युरोपियन विद्वान तथा संशोधक जॉन विल्सन और जे. टी. मॉल्सवर्थ, ज्ञानकोशकार डॉ श्री. व्यं. केतकर, प्र. न. देशपांडे, एच. एल. कोसारे तथा डॉ काशीप्रसाद जयस्वाल आदी विद्वान भी अपने संशोधन में महार नागवंशीय होने की पुष्टी करते है| नाग लोग आर्यो के कट्टर शत्रू थे| आर्य विरुद्ध अनार्य नाग इनके युद्ध कें अनेक साक्ष हिंदू पुराणो में मिलते है| आर्यो ने नाग लोगो को जिंदा जलाने के उल्लेख भी मिलते है| अगस्ती मुनी ने एक नाग व्यक्ती को आर्यो के अत्याचार सें बचाया| महार जाती कें लोग उसी नागवंशीय व्यक्ती कें वंशज है ऐसे विचार डॉ

अम्बेडकर व्यक्त करते है| उल्लेखनीय है की, महार जाती के लोग नागपूजक थे और नागधारी महादेव उनके आराध्य दैवत थे|

प्राचीन काल में नागवंशीय लोग अपने नाम कें आगे 'नाग' यह उपाधी लगाते थे| जैसे- वृषनाग, रविनाग, हयनाग, त्रयनाग, भवनाग, भीमनाग, देवनाग, गणपतीनाग, स्कंदनाग, प्रभाकरनाग, शिशुनाग, वसूनाग, व्याघ्रनाग, विशुनाग, बृहस्पतीनाग, बर्हीनाग उसी प्रकार मध्ययुगीन भारत में महार जाती के लोग अपने नाम के आगे 'नाक' यह उपाधी लगाते थे|[xvii] जैसे- खंडनाक, रामनाक, काळनाक, येसनाक, विठूनाक, भोजनाक, धारनाक, शिदनाक, गोदनाक, भागनाक, सोननाक आदी| महारो की 'नाक' यह उपाधी प्राचीन 'नाग' उपाधी का अपभ्रंश माना जाता है| प्राचीन नाग लोगो के वंशज होने के कारण महार जाती में नाम के आगे 'नाक' यह उपाधी लगाने का प्रघात निर्माण हुआ| शिवनेरी चैत्यगृह को दान देनेवाला विरसेनाक, कुडा गुंफा-लेणी में उल्लेखित वसूनाक, पूसनाक, भाजे गुंफा-लेणी में उल्लेखित अपिनाक, अहिंनाक, कान्हेरी शिलालेख में उल्लेखित नकनाक, अपरनाक, धमनाक, गोलनाक, मितनाक, कार्ले गुंफा-लेणी में उल्लेखित विरसेनाक, नाशिक शिलालेख में उल्लेखित वालीसनाग, रामनाक, आगियनाग, कफननाग, बेदरशहा ने बारावी शताब्दी में महारो को दी गयी बावन हक्को की सनद में उल्लेखित अमृतनाक, शिवकालीन गोतसभा में उल्लेखित खंडनाक, भिकनाक, नागेवाडी का पाटील नागनाक, खर्डा की लढाई में लढनेवाला शिदनाक, भीमा कोरेगाव की लढाई में महार सेना का नेतृत्व करनेवाले रतनाक, जतनाक तथा भिकनाक, भीमा कोरेगाव विजयस्तंभ में उल्लेखित सोननाक कमलनाक नाईक, रामनाक येसनाक नाईक, तथा शिपाई गोदनाक मोठेनाक, शामनाक येसनाक, भागनाक हरनाक, अबनाक काननाक, गणनाक बाळनाक, बाळनाक धोंडनाक, रूपनाक लखनाक, विटनाक रामनाक, वटीनाक धननाक, राजनाक गणनाक, बापनाक हबनाक, रेनाक जाननाक, सजनाक येसनाक, देवनाक अननाक, गोपालनाक बाळ नाक, गणनाक धर्मनाक, हरनाक हरीनाक, जेठनाक दौनाक, गणनाक लखनाक इत्यादी महारो के नाम के आगे लिखा हुआ 'नाक' उनका प्राचीन नागवंशियो से संबंध प्रदर्शित करता है| महार जाती कें कुछ उपनाम यह प्राचीन नाग वंश के कुलनामो सें मेल दर्शाते है| जैसे- खरात-क्षहरात, अहिर-अभिर, शेलार-शिलाहार[xviii] आदी| यह संपूर्ण संदर्भ महार जाती का नाग वंश सें संबंध प्रदर्शित करता है|

प्राचीन नाग वंश में अरी नामक लोग थे जो आर्यो के सबसे बडे शत्रू अर्थात महा शत्रू थे| इसलिये उन्हे महाअरी कहा गया तथा महाअरी का अपभ्रंश महार हो गया| प्राचीन नाग वंश के महर जमात के लोग आर्यो के कट्टर शत्रू थे| आर्य कभी उनका पराभव न कर सके| उन्होने उत्तर भारत में अपने छोटे छोटे राज्य स्थापित किये थे| उनकी संस्कृती आर्यो सें श्रेष्ठ थी| इसलिये उन्हे महाआर्य कहा गया होगा| महाआर्य इसी शब्द सें महार इस शब्द की व्युत्पत्ती संभव है|[xix] प्राचीन नागवंशीय जो बौद्ध धम्म के अनुयायी थे| बौद्ध धम्म के प्रचार-प्रसार में उन्होने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था| ब्राह्मण धर्म के पुनरुत्थान के बाद गुप्त तथा वाकाटक के शासनकाल में अनेक बौद्ध धर्मियो ने ब्राह्मण धर्म का स्वीकार किया लेकीन नागवंशियो ने बौद्ध धम्म को अपनाये रखा इसलिये उन पर अनन्वित अत्याचार होने लगे| राजसत्ता तथा धर्मसत्ता के आधार पर उन्हे गावो से निष्कासित किया गया| दुर्भाग्यवश उन्हे

गाव के बाहर अपनी बस्तीया बनानी पडी| गाव में भोजन के लिये अन्नधान्य न मिलने कारण उन्हे जंगली कंदमूल खाकर अपना जीवन निर्वाह करना पडा| बौद्ध धम्मानुयायी होने कारण वे हिंसा नही करते थे इसकारण वे मृत जनावरो का मासं भक्षण करने लगे| मुलभूत सुविधाओ के लिये उन्हे गाववालो पर निर्भय रहना पडा| गाववालो ने उन्हे हल्के दर्जे के काम करना अनिवार्य किया| गाव के बाहर निवास, मृत मासं भक्षण तथा हल्के दर्जो का काम इसकारण गाववाले उनसे घृणा करने लगे| नाग वंशीय बौद्ध होने कारण वे हिंदू धर्म धार्मिक विधिया नही करते थे| इसलिये हिंदू धर्मग्रंथो ने उन्हे अस्पृश्य घोषित किया| कर्नल अल्कॉट अपने 'द पुअर परीया' इस ग्रंथ में अस्पृश्य बौद्ध थे ऐसा कहते है| इन्ही अस्पृश्य जातीयो से एक जात थी- महार! गाव के बाहर रहनेवाले महारो के बस्तीस्थान को महारवाडा कहा जाता था| उल्लेखनिय है की बौद्ध भिक्खू गाव के बाहर विहार में निवास करते थे| अजंठा-एलोरा के लेणी-गुफांओ को भी महारवाडा कहा जाता था|[xx] प्राचीन बौद्ध स्तूप लेणी गुफांओ दान देनेवाले अधिकतर लोग नाक उपाधी धारक नागवंशीय महार थे| तत्कालीन महार ये पूर्वकालीन नाग वंशीय बौद्ध थे इस बात की पुष्टी डॉ अम्बेडकर भी करते है| शिवरामपंत भारदे मह+अर अर्थात जंगल या पहाडो की गुफा में रहनेवाला कहते है| उल्लेखनीय बात ये है की बौद्ध भिक्खू भी जंगल या पहाडो की लेणी-गुफाओ में रहते थे| बौद्ध भिक्षुओ को 'थेर' कहा जाता था महारो को धेड कहा जाता है| धेड यह थेर का अपभ्रंशित शब्द है| यह नागवंशीय महारो का बौद्ध धम्म सें संबंध प्रदर्शित करता है|

"अस्पृश्य लोग broken Men थे वे आदी काल सें गाव के बाहर रहते थे| उनके गाव के बाहर रहने का अस्पृश्यता सें कोई संबंध नही है| प्रारंभिक स्थायिक समाज ने अपनी सुरक्षा के लिये पराजित टोलीयो के कुछ विस्थापित लोगो को गावो के बाहर बसाया| गाव के संरक्षण के बदले में स्थायिक समाज विस्थापित लोगो को आश्रय दिया| इसप्रकार डॉ अम्बेडकर अपने 'The untouchables' इस ग्रंथ में विश्लेषण करते है| इन विस्थापित लोगो में कुछ नागवंशीय भी थे| ब्राह्मण इन पराजित लोगो का द्वेष करते थे| गुप्तकाल में वैदिक धर्म के पुनरुत्थान के बाद ब्राह्मणो ने बौद्धो का तिरस्कार करना शुरू किया| डॉ अम्बेडकर के मतानुसार तत्कालीन महार ये पूर्वकालीन बौद्ध थे आर्यो के अत्याचारो ने उन्हे हिंदू अस्पृश्य बना दिया| "महार महाराष्ट्र के मुल रहिवासी तथा शासनकर्ता थे कदंब नामक शासको ने उनका पराभव किया इस राजकीय पराभव के कारण महार अस्पृश्य बन गये"[xxi] ऐसा महारो की अस्पृश्यता कें संदर्भ में कहा जाता है| वि. रा. शिंदे इन्होने 'भारतीय अस्पृश्यतेचा प्रश्न' इस ग्रंथ में महार जाती सें सबंधित सखोल संशोधन किया है| डॉ रामकृष्ण भांडारकर महारो को मृत+आहार अर्थात मृत जानवरो खिचनेवाला ऐसा कहते है, इससे ये प्रतीत होता है की, महारो को दिये जानेवाले इस नीच काम कारण उन्हे अस्पृश्य बना दिया| श्री. म. माटे महार का अर्थ महा+आहारी अर्थात ज्यादा खानेवाला ऐसा करते है, इससे ये प्रतीत होता है की महारो में मृत जानवरो तथा गोमांस भक्षण की प्रथा के कारण वे अस्पृश्य घोषित किये गये| संपूर्ण अस्पृश्यो में सर्वाधिक अपमान महारो को सहना पडा| पेशवाओ के शासनकाल उन्हे गले में मटका तथा कमर में झाडू लगाकर घुमना पडता था| महार की छाया सें सवर्ण ब्राह्मण अपवित्र न हो इसलिये उसे जमीन लेटना पडता था|[xxii] जब जब नागवंशीय महारो को संधी प्राप्त हुई तब तब उन्होने अपना सर्वांगीण विकास करते हुये ब्राह्मण जाती के समक्ष आव्हान निर्माण किया, इसलिये ब्राह्मणो ने धर्मशास्त्र का आधार लेकर उन्हे अस्पृश्य बना कर उनके

सभी अधिकार छीन लिये|[xxiii] इसप्रकार आर्यो द्वारा पराजित होने कें कारण तथा बौद्ध धम्म का त्याग न करने कें कारण इ. स. ६०० के आसपास नागवंशीय महार अस्पृश्य बन गये|[xxiv]

मूल्यमापन

डॉ बाबासाहाब आंबेडकर यह एक प्रज्ञावंत इतिहासकर थे| उन्होने प्राचीन भारत के इतिहास का निरपेक्ष संशोधन करके नाग वंश यह प्राचीन भारत का एक प्रमुख शासक वर्ग था, बौद्ध धम्म के प्रचार-प्रसार मे उनका महत्त्वपूर्ण योगदान था| बौद्ध धम्म के पतन बाद भी वे बौद्ध सभ्यता से जुडे रहने के कारण वे महार अस्पृश्य कहलाये गये उन्ही अस्पृश्य समाज को विशेषतः महार जाती को बाबासाहाब डॉ अम्बेडकर ने दिनांक १४ ऑक्टोबर १९५६ को नाग वंशीयो की पवित्र भूमी नागपूर मे बौद्ध धम्म की दीक्षा प्रदान करके पुनः उनका उत्थान प्रारंभ किया|[xxv]

संदर्भ ग्रंथ

i डॉ अम्बेडकर, बी. आर., प्रबुद्ध भारत विशेषांक १९५६
ii कित्ता
iii महाजन वि. डी., प्राचीन भारत का इतिहास, एस. चंद प्रकाशन दिल्ली, ग्यारहवा संस्करण १९९३ पृ. ४१७
iv कोसार एच. एल., प्राचीन भारतातील नाग, ज्ञानप्रदीप प्रकाशन नागपूर, सहावी आवृत्ती संदर्भ१९९० पृ. ८
v आंबेडकर भीमराव रामजी, (अनु. मा. फ. गांजरे) अस्पृश्य मुळचे कोण व ते अस्पृश्य कसे बनले? समता प्रकाशन, नागपूर १९९२पृ. ७५
vi शिंदे वि. रा., भारतीय अस्पृश्यतेचा प्रश्न, नवभारत ग्रंथमाला, नागपूर १९३३ पृ. १०३
vii कोसारे, उपरोक्त, पृ १५५
viii जोशी महादेवशास्त्री, भारतीय संस्कृती कोश, खंड ४ पृ. ७४७
ix मेश्राम गोकुळदास, सिंधू संस्कृतीचे वारसदार, सुगावा प्रकाशन पुणे, प्रथम आवृत्ती २००६ पृ. १४४
x कित्ता
xi कित्ता
xii कित्ता,
xiii देव ,.भा .शां ,पवनी उत्खनन
xiv आंबेडकर बी. आर. बौद्ध दीक्षा विशेषांक ,प्रबुद्ध भारत ,१९५६
xv खैरमोडे चां. भ., डॉ भीमराव रामजी आंबेडकर, खंड एक, डॉ आंबेडकर एज्युकेशन सोसायटी मुंबई, द्वितीय आवृत्ती, १९६८ पृ. २२
xvi खरात शंकरराव, महाराष्ट्रातील महारांचा इतिहास, प्रकाशक शकुंतला खरात पुणे, प्रथम आवृत्ती २००३ पृ. २१
xvii कित्ता, पृ, ७१
xviii कित्ता

xix गणवीर, रत्नाकर, महार हे कोण? सा. सिंहगर्जना, (संपा. म. बा. मेश्राम) दिवाळी अंक, १९७५

xx सांकलिया ह ,.श्री .माटे म .धी .महाराष्ट्रातील पुरातत्त्व पृ ८० .

xxi कित्ता पृ. १८

xxii कठारे अनिल, शिवकाळ व पेशवाईतील महारांचा इतिहास, सुगावा प्रकाशन पुणे, तृतीय आवृत्ती २००९ पृ. ५३

xxiii खैरमोडे, चां. भ. अस्पृश्यांचा लष्करी पेशा, पृ. २

xxiv कठारे, उपरोक्त, पृ. ३८